द्वितीय इकाई

(THEME-2)

समुदाय स्तर पर श्वास में संक्रमण (निमोनिया) से होने वाले रोगों (एआरआई) एवं संभावित जीवाणु संक्रमण का प्रबंधन

(Community based management of A.R.I. (Pneumonia) and Sepsis)

समुदाय स्तर पर श्वास में संक्रमण (निमोनिया) से होने वाले रोगों (ए.आर.आई) एवं संक्रमण का प्रबंधन

मोडयूल हेतु क्रमिक सारणी:

प्रत्येक स्तर पर प्रथम इकाई मे दिये गए गृहकार्य की जाँच करें एवं समिक्षा करें।

राज्य स्तर प्रशिक्षण कार्यक्रम: जिला स्तर संभागी एवं खण्ड स्तर संभागी दूसरी इकाई हेतु प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे।

सामुदायिक / प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्तर प्रशिक्षण कार्यक्रम: उपकेन्द्र स्तर पर एवं आंगनवाड़ी स्तर पर कार्यरत समस्त एएनएम, आशा एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण लेंगे।

समुदाय स्तर प्रशिक्षण कार्यक्रम: चयनित पीयर सुपरवाईजर द्वारा समुदाय स्तर पर समस्त फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओ को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

मोडयूल द्वारा समस्त कार्यकर्ताओ की क्षमता वर्धन हेतु इस कार्यक्रम में पाँच महत्वपूर्ण गतीविधियाँ सम्मलित की गयी है-

प्रशिक्षण, अभ्यास, गृहकार्य ,सुपरविजन एवं समिक्षा

मोडयूल का उद्देश्य:-

यह मोडयूल प्रशिक्षण संभागी को निम्नलिखित जानकारी देगा।

* संभावित जीवाणु संक्रमण का वर्गीकरण करना सीखना
* हल्के तथा मध्यम स्तर के संक्रमण का एंटिबायोटिक से समुदाय/घर पर उपचार करना
* गंभीर रूप से बीमार बच्चे की पहचान करना, समुदाय स्तर पर प्राथमिक उपचार कर उच्च चिकित्सा संस्थान पर रेफर करना

इस मोडयूल के लिए संभावित समय- 90 मिनट

आवश्यक सामग्री-

- ✓ मोडयूल की प्रति
- ✓ हैंडआउट की प्रतियाँ (2.1, 2.2, 2.3 **&** 2.4)
- * हैंडआउट 2.1- इस हैंडआउट मे हम श्वास मे होने वाले संक्रमण से होने वाले रोगों (एआरआई) एवं संभावित जीवाणु संक्रमण के लक्षणो को पहचान कर आवश्यक वर्गिकरण करना सीखेंगे।
  - ✓ हैंडआउट 2.2- इस हैंडआउट मे हम संक्रमण की पहचान करने हेतु आवश्यक दक्षता (कौशल) के बारे मे सीखेंगे।
  - ✓ हैंडआउट 2.3- इस हैंडआउट मे हम वर्गिकरण उपरांत आवश्यक प्रबंधन के बारे मे सीखेंगे
  - ✓ हैंडआउट 2.4- इस हैंडआउट मे हम संक्रमण के इलाज मे उपयोग ली जाने वाली आवश्यक दवाइयों के बारें मे जानकारी हासिल करेंगे।
- * कुर्सियाँ एवं दरी
- * चाक एवं बोर्ड

* वजन मापने की मशीन
* एआरआई टाइमर
* थेर्मोमीटर
* वीडियो चलाने हेतु कम्प्युटर एवं स्पीकर

सेम्पल रजिस्ट्रेशन 2012 सर्वे के अनुसार श्वांस सम्बधित रोग शिशु मृत्यु दर का मुख्य कारण है। विश्व की 27 प्रतिशत नवजात मृत्यु भारत में होती है। न्यूमोनिया/संक्रमण 0–5 वर्ष की उम्र के शिशुओं की मृत्यु का मुख्य कारण है। इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यह दिशा निर्देश बनाया गये है, जो कि चरणबद्ध तरीके से श्वांस में संक्रमण से होने वाले रोग (ए.आर.आई.) के बारे में जानकारी देंगा।

चरण बद्ध तरीके से निमोनिया/ संभावित जीवाणु संक्रमण की पहचान करना -

* चरण 1: श्वास मे संक्रमण से होने वाले रोगों (एआरआई) एवं संभावित जीवाणु संक्रमण के लक्षणो को पहचानना-

शिशु की आरंभिक जांच के बाद आवश्यक वर्गीकरण करने हेतु हैंडआउट 2.1 पढ़ें। हैंडआउट मे दिये गए अभ्यास कार्य को हल करे।

आवश्यक तकनीकी दक्षता के लिए हैंडआउट 2.2 पढ़ें।

* चरण 2: श्वास मे संक्रमण से होने वाले रोगों (एआरआई) एवं संभावित जीवाणु संक्रमण के लक्षणो को पहचानकर उनका आवश्यक प्रबंधन (उपचार) करना-

शिशु को बीमारी हेतु वर्गीकरण करने के बाद आवश्यक इलाज हेतु हैंडआउट 2.3 पढ़ें। हैंडआउट मे दिये गए अभ्यास कार्य को हल करे।

आवश्यक दवाइयों की जानकारी एवं उपयोग हेतु हैंडआउट 2.4 पढ़ें।

गृहकार्य- इकाई एक एवं दो मे सिखाये गए प्रबंधन के आधार पर समुदाय मे आपके द्वारा इलाज किए अथवा रेफर किए गए (सपोर्टिव सुपरवाइज़ किए गए) शिशु की सूची तैयार कर, किसी एक शिशु की केस स्टडी लिखेंगे एवं इकाई तीन के प्रशिक्षण मे लेकर आएंगे।

श्वास में संक्रमण से होने वाले रोगों से (ए.आर.आई) अथवा संक्रमण से बचाव:–

* शिशु को संभालने से पूर्व, खाना बनाने से पहले एवं बाद मे, शिशु की सफाई करने के बाद, शौच के बाद अपने हाथ साबुन से अवश्य धोये।
* शिशु को प्रथम स्तनपान अवश्य करवाएँ, शिशु को 6 माह तक सिर्फ स्तनपान करवाएँ।
* 6 माह के बाद शिशु को धीरे धीरे पर्याप्त मात्रा मे, स्तनपान के साथ साथ ऊपरी आहार देना प्रारम्भ करें।
* सर्दी के मौसम मे शिशु के सिर एवं पैरों को ढककर रखें।
* शिशु को पेंटावेलेंट की तीन खुराक एवं मीजल्स की 2 खुराक अवश्य लगवाएँ।
* घर मे खाना बनाते समय उठने वाले धुएँ से होने वाले प्रदूषण से शिशु को बचाये एवं प्रदूषण कम करें।
* खाँसी एवं जुकाम का घर पर समय पर घरेलू इलाज करें।
* किसी भी खतरे वाले लक्षण के नजर आने पर शिशु को तुरन्त स्वास्थ्य कार्यकर्ता के पास अथवा अस्पताल लेकर जाएँ।

सामान्य खांसी या जुकाम का घर पर उपचारः

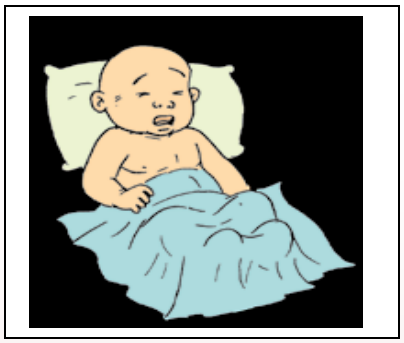

* शिशु को गर्म रखें और हवा से बचाएँ।
* शिशु की नाक बंद हो और इससे उसे दूध पीने में बाधा हो रही हो, तो नाक साफ करें। इसके लिए, घर में बने नमक के घोल (उबले और ठंडे किए गए एक गिलास पानी में एक चुटकी नमक मिलाकर) की बूंदे नाक में डालें और रूई की एक साफ बत्ती से नाक साफ करें।
* थोड़ी–थोड़ी देर में और हर बार अधिक समय तक दूध पिलाएँ। छः माह तक शिशु को केवल स्तनपान ही कराएँ।
* खांसी या जुकाम के दौरान शिशु को सामान्य आहार देना जारी रखें। ऐसा करना बहुत जरूरी है क्योंकि इससे शिशु कुपोषित नहीं होगा और उसे शीघ्र स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।
* यदि शिशु सामान्य मात्रा में भोजन न खा पा रहा हो, तो उसका भोजन छोटी–छोटी मात्रा में बांटकर थोड़ी–थोड़ी देर के बाद खिलाएँ।
* 6 माह से अधिक उम्र के शिशु को स्तनपान के साथ पूरक आहार के रूप में अधिक गाढ़ा भोजन, जैसे खिचड़ी, दलिया, सूजी, या दूध–चावल और इडली इत्यादि भी उम्रानुसार दिया जा सकता है।
* अतिरिक्त उर्जा के लिए भोजन में थोड़ा घी/तेल भी मिलाएँ।
* बीमारी के बाद, शिशु को कम–से–कम एक सप्ताह तक एक अतिरिक्त भोजन दिया जाना चाहिए ताकि वह शीघ्र स्वस्थ हो सकें।
* तरल पदार्थ अधिक मात्रा में पिलाएँ।
* अतिरिक्त तरल पदार्थ (जितना शिशु ले सके) दें, जैसे दाल का घोल, सब्जियों का उबालकर बनाया घोल, साफ सादा पानी, या स्थानीय स्तर पर उपलबध अन्य पेय पदार्थ।
* हमेशा कटोरी और चम्मच से दूध पिलाएँ। बोतल का प्रयोग कभी न करें।
* छः माह से अधिक आयु के बच्चों के गले को आराम देने और खांसी शांत करने के लिए निम्नलिखित का प्रयोग करके, खासी का शरबत बनाकर चाय के रूप में पिलाएँ, जैसेः
    - ✓ चीनी, अदरक, नीबू, तुलसी की पत्तियां और पुदीना।
    - ✓ सौंफ, इलायची, अदरक।
* कोई अन्य स्थानीय पद्धति, जिससे शिशु को आराम मिले और जो अरूचिकर या हानिकारक न हो, को भी बढ़ावा दिया जा सकता है, उदाहरण के लिए हल्का गर्म सरसों का तेल लगाना।
* जुकाम स्वयं ठीक होने वाली बीमारी है।

नोटः यदि शिशु सो रहा हो और उसे खांसी हो या सांस लेने में कठिनाई हो रही हो, तो शिशु को जगाने से पहले देखें कि वह एक मिनट में कितनी बार सांस लेता है।

याद रखेंः–

* यदि किसी शिशु में खतरे के लक्षण या छाती में धंसाव दिखाई दे तो वह गंभीर निमोनिया या किसी बहुत गंभीर रोग से पीड़ित है और उसे तत्काल अस्पताल भेजने की आवश्यकता है।
* यदि शिशु में खतरे के कोई सामान्य लक्षण मौजूद न हों और छाती सें धंसाव भी न हो, किंतु वह तेज गति से सांस ले रहा हो, तो वह निमोनिया से पीड़ित है। ऐसे शिशु को घर पर दवाएँ देकर इलाज किया जा सकता है।
* यदि शिशु में खतरे के कोई सामान्य लक्षण मौजूद न हों और छाती में भी धंसाव न हो और वह तेज गति से सांस न ले रहा हो, तो उसे निमोनिया, खांसी या जुकाम नहीं है। शिशु की माता को शिशु की घरेलू देखभाल करने का तरीका बताएं।
* **जिस बच्चे को 30 या अधिक दिन से खांसी चल रही हो चाहे यह हल्की ही हो उसे आवश्यक जांच के लिए अस्पताल भेंजे। तीन दिन से अधिक समय से होने वाला बुखार या खांसी से ग्रसित बच्चे को भी अस्पताल भेजना चाहिए।**

हैन्डआउट 2.1 –संभावित जीवाणु संक्रमण की पहचान एवं वर्गीकरण

पूछो	क्या शिशु को खांसी है	हाँ	हाँ	हाँ
	खांसी कितने समय से-	30 दिन से कम	30 दिन से कम	30 दिन से या ज्यादा
	क्या सांस लेने मे कठिनाई हो रही है	नहीं	हाँ	हाँ
	क्या शिशु बेहोश है	नहीं	नहीं	हाँ
	क्या शिशु को दौरे पड़ रहे है-	नहीं	नहीं	हाँ
	क्या शिशु सुस्त है-	नहीं	नहीं	हाँ
देखो	क्या शिशु को बुखार है	नहीं	हाँ	हाँ
	छाती का धँसाव	नहीं	नहीं	हाँ
	क्या शिशु के नथुने फूले हुए है-	नहीं	नहीं	हाँ
	क्या शिशु के शरीर पर एक बड़ा फोड़ा है-	नहीं	नहीं	हाँ
	क्या शिशु के शरीर पर 10 या अधिक छोटी फुंसी है-	नहीं	हाँ	हाँ
	क्या शिशु की नाल लाल अथवा नाल से पीप आ रही है-	नहीं	हाँ	हाँ
गिनो	सांस की गति है 0-2 माह: 60 या अधिक; 2 माह से एक वर्ष: 50 या अधिक; 1 से 5 वर्ष: 40 या अधिक	नहीं	हाँ	हाँ
सुनो	क्या शिशु सांस लेते समय कराह रहा है-	नहीं	नहीं	हाँ
		खांसी या जुकाम	निमोनिया अथवा लोकल जीवाणु संक्रमण	गंभीर निमोनिया या गंभीर जीवाणु संक्रमण
करो		प्लान- 'क'	प्लान- 'ख'	प्लान- 'ग'

केस स्टड़ी–नीरा

अभ्यास– नीरा की बीमारी के लिए आकलन, वर्गीकरण एवं उपचार करें।

नीरा सात सप्ताह की है और उसका वजन तीन किलोग्राम है। उसका तापमान सामान्य है। बीमार होने के कारण माँ उसे लेकर आई है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता सबसे पहले सम्भावित जीवाणु संक्रमण के चिन्हों के लिए उसका आकलन करती है। माँ कहती है कि नीरा को दौरे नहीं पड़े थे। स्वास्थ्य कार्यकर्ता उसकी सांस की गिनती करती हे। उसकी सांस की दर 63 प्रति मिनट है। वह सो रही थी, लेकिन माँ ने जैसे ही चादर हटाई, वह जाग गई। उसकी पसलियां धंस रही हैं, एवम हल्का बुखार है। उसकी नाभि लाल है और एवं पीप बह रही है। कोई फुंसी भी नहीं है। वह रो रही है और हाथ–पैर हिला रही है। जब स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने माँ से नीरा के दस्तरोग के बारे में पूछा तो माँ ने बताया कि तीन दिन से दस्त हो रहे हैं। नीरा अब भी रो रही है, लेकिन जैसे ही माँ ने उसे स्तन से लगाया नीरा चुप हो गई। स्तनपान बंद होते ही वह फिर रोने लगी। उसकी आंखें धंसी हुई नहीं, बल्कि सामान्य दिखती है। पेट की त्वचा पर चिकोटी भरने बाद त्वचा धीरे लौटती है।

उपरोक्त केस को वर्गीकृत करें ?

हैन्डआउट 2.2-संक्रमण से होने वाले रोगों (ए.आर.आई.) के लक्षणों को पहचानने हेतु आवश्यक कौशल :

शिशु के शरीर का बुखार मापने का तरीका-

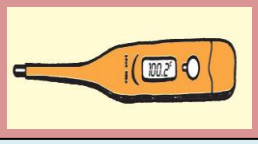

- शिशु का तापमान 99 डिग्री फारेनहाइट या 37.2 डिग्री सेल्सियस होने पर पैरासिटामोल की खुराक दे।
- शिशु का तापमान 95.1-97 डिग्री फारेनहाइट या 35.1- 36.1 डिग्री सेल्सियस होने पर माता-पिता को शिशु को बार बार दूध पिलाने एवं गरम रखने हेतु बोले।

शिशु की छाती का अंदर की और धँसाव देखने का तरीका-

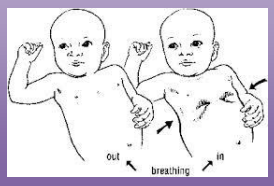

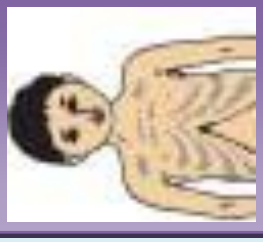

जिस शिशु को खांसी या सांस लेने में कठिनाई हो, यदि उसकी छाती में अंदर की ओर धंसाव है तो शिशु को निमोनिया है।

एक वर्ष से कम उम्र का शिशु जब सामान्य स्थिति में सांस लेता है, तब जब वह सांस अन्दर खींचता है, उसकी पूरी छाती (ऊपरी तथा निचला हिस्सा) तथा पेट का भाग बाहर की ओर निकलते हैं जब बच्चे में छाती का धंसाव होता है तब शिशु के सांस अन्दर खींचने पर छाती का निचला हिस्सा अन्दर की ओर जाता है।

एक वर्ष से कम आयु के शिशुओं में छाती में हल्का धंसाव हो सकता है। किन्तु एक वर्ष से अधिक आयु के बच्चों में, छाती में हलका धंसाव होना सामान्य बात नहीं होती।

शिशु की सांस की गति मापने का तरीका-

- ✓ शिशु के चुप एवं शांत होने की प्रतीक्षा करें।
- ✓ अपनी कलाई की घड़ी (ए.आर.आइ.टाइमर) उतारें और इसे अपने एक हाथ में पकड़ें तथा इसे शिशु के पेट के पास रखें।
- ✓ शिशु की कमीज ऊपर उठाएँ ताकि आप उसे पूरी सांस लेते समय देख सकें, एक बार पेट फूलने और पिचकने पर एक श्वास पूरी हो जाती है।
- ✓ गिनें कि शिशु एक मिनट में कितनी सांस लेता है।

एक मिनट मे ली गयी सांस की संख्या सामान्य है अगर-

यदि शिशु की आयु है	गिनती निम्नलिखित होने पर सांस तेज है
0 से 2 माह तक	प्रति मिनट 60 सांस या अधिक
2 माह से 12 माह तक	प्रति मिनट 50 सांस का अधिक
12 माह से 5 वर्ष तक	प्रति मिनट 40 सांस या अधिक

हैंडआउट 2.3- जीवाणु संक्रमण के इलाज हेतु दिया जाने वाला उपचार

खांसी या जुकाम
प्लान-"क"

- खाँसी अथवा जुकाम के लिए घरेलू देखभाल करने की सलाह दे। (मॉड्यूल-2 पेज 4 पर)
- अगर खाँसी 30 दिनो से अधिक समय से है तो अस्पताल मे जांच करवाने की सलाह दे।

निमोनिया अथवा लोकल जीवाणु संक्रमण
प्लान "ख"

- 0-2 माह के शिशु को इंजेक्सन जेंटामाइसिन एवं सिरप अमोक्सीसिलिन दे। (हैंडआउट 2.4 मे दिये गए निर्देश अनुसार)
- 2 माह से 5 वर्ष के शिशु को कोट्रीमोक्जाजोल की खुराक दे (हैंडआउट 2.4 मे दिये गए निर्देश अनुसार)

रोगी की आयु (वजन)	गेलियों की मात्रा
जन्म से 1 महीने तक	
1 माह में 2 माह तक	एक गोली
2 माह से 12 माह तक	2 गोली
12 माह से 5 वर्ष तक	3 गोली

- बुखार होने की स्तिथी मे पैरासिटामोल की खुराक दे।
- दो दिन बाद दोबारा जांच करें, हालत मे सुधार न होने की स्तिथी मे तुरन्त अस्पताल रेफर करें
- स्थानीय (local) जीवाणु संक्रमण के इलाज हेतु 0.5% सान्द्रता युक्त जेन्सन वायोलेट पेंट लगाये
- खाँसी अथवा जुकाम के लिए घरेलू देखभाल करने की सलाह दे।

गंभीर निमोनिया या गंभीर जीवाणु संक्रमण
प्लान "ग"

- 0-2 माह के शिशु को इंजेक्सन जेंटामाइसिन एवं सिरप अमोक्सीसिलिन की पहली खुराक दे एवं तुरन्त रेफर करें (हैंडआउट 2.4 मे दिये गए निर्देश अनुसार)

शिशु का वजन (किलो)	**इंजेक्सन जेंटामाइसिन की मात्रा**	**सिरप अमोक्सिसिलीन**
1.5 किलो से काम	शिशु को चिकित्सा केन्द्र रेफर करें	
1.5 - 2.0	0.2 मिली	2 मिली
2.0 - 3.0	0.3 मिली	2.5 मिली
3.0 - 4.0	0.4 मिली	3 मिली
4.0 - 5.0	0.5 मिली	4 मिली

- 2 माह से 5 वर्ष के शिशु को कोट्रीमोक्जाजोल (हैंडआउट 2.4 मे दिये गए निर्देश अनुसार) की पहली खुराक दे एवं तुरन्त रेफर करें
- बुखार होने की स्तिथी मे पैरासिटामोल की खुराक दे।

शिशु की आयु	मात्रा
2 माह-3 वर्ष	¼ गोली (एक चौथाई)
3 वर्ष- 5 वर्ष	½ गोली (आधी)

- माँ का स्तनपान जारी रखने की सलाह दे।
- शिशु को गरम रखने की सलाह दे।

नोट: उपरोक्त निर्देशित दवाओं के उपयोग हेतु विस्तृत दिशानिर्देश के लिए हैंडआउट 2.4 देंखे।

केस स्टडी- नीरा (हैंडआउट 2.2) केस मे आप क्या उपचार देंगे?

हैंडआउट 2.4- बीमारी के दौरान दी जाने वाली आवश्यक दवाईयां-

बुखार होने पर दी जाने वाली आवश्यक पैरासिटामोल की खुराक-

1 गोली- 500 मिलीग्राम

अवधि- केवल तीन दिन देनी होगी

प्रति किग्रा वजन के अनुसार पैरासिटामोल की खुराक- 10-15 मिग्रा/किग्रा/खुराक

दिन मे अधिकतम चार बार, छः-छः घंटे के अंतराल पर

शिशु की आयु	मात्रा	कितनी बार दे
2 माह-3 वर्ष (वजन 4-14 किग्रा)	¼ गोली (एक चौथाई)	दिन मे अधिकतम चार बार
3 वर्ष- 5 वर्ष(वजन 14-19 किग्रा)	½ गोली (आधी)	

5 मिली (एक छोटी चम्मच सिरप) = 125 मिग्रा/5 मिली (प्रति एक मिली मे 25 मिग्रा पैरासिटामोल होता है।

प्रति किग्रा वजन के अनुसार पैरासिटामोल की खुराक- 10-15 मिग्रा/किग्रा/खुराक

अवधि- केवल तीन दिन देनी होगी

दिन मे अधिकतम चार बार, छः-छः घंटे के अंतराल पर

शिशु की आयु	सिरप की मात्रा		कितनी बार दे
	मिली मे	चम्मच मे	
नवजात शिशु 3 किग्रा से कम	1.25 मिली	एक चौथाई चम्मच	दिन मे अधिकतम चार बार
1 माह से 1 वर्ष (3-8 किग्रा)	2.5 मिली	आधा चम्मच	
1-3 वर्ष (8-14 किग्रा)	5 मिली	एक चम्मच	
3 वर्ष से ज्यादा (14 किग्रा से अधिक)	7.5 मिली	डेढ चम्मच	

कोट्राईमोक्साजोल द्वारा उपचारः–

दवा देने से पूर्व इसके उपयोग हेतु अंतिम तारीख देख ले।

1 गोलीः सल्फामेथॉक्साजोल 100 मिग्रा + ट्राइमिथोप्रिम 20 मिग्रा
5 मि.ली. या (1 छोटा चम्मच) सिरपः सल्फोमेथॉक्साजोल 200 मिग्रा + ट्राइमिथोप्रिम 40 मिग्रा
अवधिः पाँच दिनों तक दी जाती है
कितनी बारः दिन में दो बार 12 घण्टे के अन्तराल से

रोगी की आयु (वजन)	गेलियों की मात्रा	सिरप की मात्रा	कितनी बार दे
जन्म से 1 महीने तक(3 किग्रा से कम)		एक चौथाई चम्मच (1.25 मिली)	दिन में दो बार 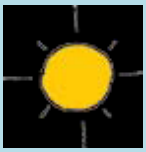
1 माह में 2 माह तक (3–4किग्रा)	एक गोली	आधा चम्मच (2.5 मिली)	
2 माह से 12 माह तक (4–10 किग्रा)	2 गोली	एक चम्मच (5 मिली)	
12 माह से 5 वर्ष तक (10–19 किग्रा)	3 गोली	डेढ चम्मच (7.5 मिली)	

इंजेक्सन जेंटामाइसिन एवं सिरप अमोक्सिसिलीन द्वारा उपचार:-

दवा देने से पूर्व इसके उपयोग हेतु अंतिम तारीख देख ले।

0-2 माह के शिशु जो संक्रमण से ग्रसित है, उन्हे एएनएम द्वारा निम्न स्तिथी मे इंजेक्सन जेंटामाइसिन के साथ सिरप अमोक्सिसिलीन देना चाहिए।

- ✓ रेफर पूर्व खुराक- चिकित्सा संस्थान मे रेफर करने से पूर्व एएनएम द्वारा एक खुराक इन एंटिबायोटिक्स की देनी चाहिए।
- ✓ एंटिबायोटिक्स द्वारा इलाज पूरा करने मे- किसी भी चिकित्सा संस्थान द्वारा शिशु को छुट्टी दे दी गयी हो, एवं ऐसे शिशु का एंटिबायोटिक द्वारा इलाज पूरा नहीं हुआ हो, ऐसी स्तिथी मे चिकित्सक द्वारा लिखे गए इलाज को एएनएम पूरा करे।
- ✓ 0-2 माह के शिशु जिनहे रेफर करना संभव न हो, या उनके परिवार वाले उच्च चिकित्सा संस्थान मे नहीं जाना चाहते हो।

शिशु का वजन (एएनएम शिशु का वजन अवश्य ले)	**इंजेक्सन जेंटामाइसिन की मात्रा (80 मिग्रा /2 एमएल)**	**सिरप अमोक्सिसिलीन (125 मिग्रा / 5 एमएल)**
1.5 किलो से काम	शिशु को चिकित्सा केन्द्र रेफर करें	
1.5 - 2.0 किलो	0.2 मिली	2 मिली
2.0 - 3.0 किलो	0.3 मिली	2.5 मिली (आधा चम्मच)
3.0 - 4.0 किलो	0.4 मिली	3 मिली
4.0 - 5.0 किलो	0.5 मिली	4 मिली
रूट, किस तरह देना है	इंट्रामसकुलर (जांघ के मध्य बाहरी एवं पार्श्व भाग पर)	मुँह के द्वारा
मात्रा	5 मिग्रा / किग्रा /खुराक दिन मे एक बार	25 मिग्रा / किग्रा / खुराक दिन मे 2 बार
उपचार की अवधि	सात दिवस	सात दिवस

नोट: **इंजेक्सन जेंटामाइसिन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बातें-**

1. **इसे 0.1 एमएल निशान वाली 1 एमएल की सिरिंज और 23 गेज़ की सुई द्वारा लगाया जाता है। (1 एमएल/23 गेज़ की टीकाकरण वाली ऑटो डिस्पोज़ल सिरिंज काम मे नहीं लेना चाहिए।**
2. हर बार नया इंजेक्सन एवं सुई का उपयोग करें।
3. यह एक तापमान स्थिर दवा है, जिसे सामान्य तापमान पर रख सकते है।
4. एक ही वायल 7 दिन तक उपयोग कर सकते हैं, अगर वायल मे दवा का रंग बदल गया हो अथवा धुंधला पड गया हो तो इसे उपयोग मे ना लेवे।
5. इंजेक्सन लगाने से पूर्व चमड़ी को स्पिरिट स्वाब से अच्छी तरह से साफ कर ले।

स्थानीय (local) जीवाणु संक्रमण का जेन्सन वायोलेट (Gentian violet) द्वारा उपचार-

शिशु जिनकी नाभी नाल लाल है अथवा पीप निकल रही है, शरीर पर छोटी फुंसिया हो रही है एवं मुँह मे छाले हो रहे हैं।

शरीर की फुंसी अथवा नाभी नाल के संक्रमण के इलाज हेतु-

- ✓ सबसे पहले अपने हाथ धोये
- ✓ सावधानी से साबुन एवं पानी की सहायता से पस अथवा जमी हुई पपड़ी/छाल हटाएँ।
- ✓ कुछ देर तक इसे सूखने दे
- ✓ अब इस पर 0.5% सान्द्रता युक्त जेन्सन वायोलेट पेंट लगाये

मुँह मे छाले के इलाज हेतु-

- ✓ सबसे पहले अपने हाथ धोये
- ✓ अपनी उंगली मे एक साफ, मुलायम कपड़ा लपेट ले
- ✓ अब उंगली को नमक के पानी मे भिगोकर, धीरे धीरे शिशु का मुँह साफ करें
- ✓ अब इस पर 0.25% सान्द्रता युक्त जेन्सन वायोलेट पेंट लगाये